बेअीमानीकी बाढ़

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १२ | सम्पादक — किशोरलाल मशरूवाला | अंक ४९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ६ फरवरी, १९४९

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

धर्म बदलनेका काम

कुछ महीने पहले गुजरातके मशहूर हरिजनसेवक श्री परीक्षितलाल मजमूदारने अीसाअी मिशनरियोंसे की हुअी अपील मुझे छापनेके लिअे भेजी थी । अुन्होंने अुन लोगोंसे अपील की थी कि अब चूँकि कानूनसे अछूतपन मिटा दिया गया है, अिसलिअे अुन्हें हरिजनोंके लिअे चलाअी जानेवाली खास शालायें बन्द कर देनी चाहियें और कानूनके अमल और हरिजनोंकी तरक्कीके मकसदमें मदद पहुँचानी चाहिये । श्री मजमूदारका कहना है कि अगर अिन स्कूलोंको चालू रखना ही हो, तो अुन्हें अैसे स्कूलोंमें बदल देना चाहिये, जिनके दरवाजे सबके लिअे खुले हों । साथ ही, वे अैसी जगह होने चाहियें, जहाँ सब बच्चे पढ़नेके लिअे आ सकें । वे हरिजनोंको यह सलाह दें और समझावें कि वे अपने बच्चोंको आम स्कूलोंमें भेजें, और अिस तरह हरिजन कार्यकर्ताओंको अुनके काममें मदद दें ।

मुझे लगा कि अिस बारेमें कानून और सरकारकी नीति तो साफ है, लेकिन सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके साथ वैसा दोस्ताना बरताव नहीं करते, जैसा अुन्हें करना चाहिये । अिसलिअे अीसाअी मिशनरियोंको हरिजनोंकी शिक्षाका काम बन्द करनेके लिअे नहीं कहना चाहिये । फिर, आम स्कूलोंके साथ साथ हरिजनोंके लिअे खास स्कूल भी चलते रहें, तो अिसमें कोअी नुकसान नहीं है । अिस बारेमें मैंने श्री ठक्कर बापाकी सलाह भी ली । वे मेरे साथ अेकराय थे और अुन्होंने वह अपील थोड़े समयके लिअे मुलतवी रखनेको श्री परीक्षितलालसे कहा ।

अपनी अपीलमें श्री परीक्षितलालने शिक्षाके बहाने मिशनरियोंकी तरफसे चलाये जानेवाले लोगोंके धर्म बदलनेके कामका जिक्र किया था । सच पूछा जाय तो अुनका खास मकसद यही होता है; अुनके शिक्षा, डॉक्टरी मदद और दूसरे मानव-दयाके काम धर्मपलटेके कामको पूरा करनेके साधन ही हैं । मिशनरियोंकी अिन सेवाओंके पीछे रहे हिन्दू-विरोधी रुखके कारण श्री परीक्षितलालको यह अपील करनेकी प्रेरणा मिली थी ।

अगर मुझे यह विश्वास होता कि अीसाअी धर्म मंजूर करनेसे हरिजनोंकी आध्यात्मिक (रूहानी) अुन्नति होगी, तो मैं अुनके धर्मपलटेके लिअे कोअी चिन्ता न करता । मनुष्यमें भलाअीका यानी सत्यपरायण, सदाचारी और प्रेम, आशा, अुदारता, सेवा, नम्रता और दूसरे अच्छे गुणोंवाला जीवन बितानेकी लगन पैदा करनेवाली चिनगारीका होना सबसे महत्वकी बात है; और किसी भी वजहसे धर्मपलटा करनेसे वह हरिजनोंको मिलती हो, तो अपने पुरखोंके धर्मसे चिपटे रहकर गन्दा और अज्ञान भरा जीवन बितानेके बजाय धर्मपलटा करके शुद्ध और ज्ञानपूर्ण जीवन बिताना अुनके लिअे ज्यादा अच्छा है ।

लेकिन दुनियाके अलग अलग धर्मोंमें अपने अनुयायियोंको अैसी चिनगारी देनेकी खास ताकत बहुत समयसे रही नहीं है । मनुष्योंमें भाअीचारेकी अूँची भावना पैदा करनेवाली ताकतके बदले वे अुनमें फूट पैदा करनेवाली ताकत बन गये हैं । नतीजा यह है कि वे लोगोंमें मतभेद पैदा करते हैं और अुन्हें अलग अलग समाजोंमें बाँट देते हैं । जो अीश्वर अेक है और बगैर नामवाला है, अुसे अिन धर्मोंने अलग अलग नाम दिये हैं और अुसकी पूजा-आराधनाके लिअे अलग अलग तरीके बनाये हैं । वे यह सिखाते हैं कि बगैर नामवाले अीश्वरका जो नाम और अुसकी आराधनाका जो तरीका लोगोंको अपने गुरुओंसे विरासतमें मिला है, वही सच्चा और असर पैदा करनेवाला है । बादमें वे अपने अनुयायियोंको दूसरे धर्मके अुनके मानव-बन्धुओंसे ज्यादा से ज्यादा अलग करनेके लिअे अलग तरहके नाम, पोशाक, सभ्यताके नियम, जीवन बितानेका ढंग, विवाह व विरासतके नियम और दूसरी अैसी अलग तरहकी सामाजिक बातें अख्तियार करें, तो अिसमें कोअी अचरज नहीं । धर्मपलटेके बाद वालजी विलियम या वलीमुहम्मद बन जाता है; धूलाजी डोनाल्ड या दौलतखान बन जाता है; मूली मेरी या मरियम वगैरा बन जाती है । यह सब कोअी जानते हैं कि हरिजनोंके नाम भी आम तौर पर सवर्ण हिन्दुओंके नामों जैसे सुन्दर नहीं होते । वे अपने बच्चोंको वालिया, धूलिया, कूकड़ा, रामला और अैसे ही दूसरे सादे नाम देकर सन्तोष मान लेते हैं । मिशनरियोंके स्कूलोंमें पढ़नेवाले बच्चोंको अुनके अीसाअी मास्टर मनमें आवे वैसे विलियम, जेम्स, ज्यॉर्ज, वेलेन्टाअिन, मेरी, लिली जैसे सुन्दर लगनेवाले युरोपियन नामोंसे पुकारने लगते हैं । मुझे मालूम हुआ है कि समाजके अूँचे वर्गके लोग भी अैसे नामोंको ज्यादा पसन्द करते हैं । तब फिर छोटे बच्चे अुमंगसे अिनका स्वागत करें, तो कोअी अचरज नहीं है । बादमें अुनके मनमें धीरे धीरे यह बात बैठाअी जाती है कि वे अीसाअी बन गये हैं । और अिस तरहसे स्कूल अीसाअी पैदा करनेके कारखाने बन जाते हैं ।

गुजरातके अेक गाँवके चमारोंने जो शिकायत की है, अुसके आधार पर मैं यह लिख रहा हूँ ।

अीसाअी मिशनरी संस्थाओंसे मैं यह बिनती करता हूँ कि वे सच्ची धर्मभावनासे अपनी हालत और फर्जका विचार करें । गांधीजी कहते थे कि किसी भी चर्चमें अीसाअी धर्मकी विधिके मुताबिक दीक्षा लिये बिना भी वे पूरे पूरे अीसाअी थे और कलमा पढ़े बिना भी पूरे पूरे मुसलमान थे । किसी भी सच्ची श्रद्धावाले बौद्ध, जैन और सिक्खकी तरह वे भी पूरे पूरे बौद्ध, जैन और सिक्ख थे । साथ ही, वे कभी यह कहना भी नहीं चूकते थे कि वे सनातन वैष्णव हिन्दू धर्ममें पैदा होनेवाले सच्चे हिन्दू हैं । सच बात यह है कि वे किसी पंथ या सम्प्रदायके नहीं, बल्कि सत्यके अुपासक थे ।

हम किसी खास नामके धर्मको पालनेवाले समाजमें पैदा हो सकते हैं । लेकिन अिसे जरूरतसे ज्यादा महत्व देनेकी भूल हमें नहीं करनी चाहिये । और अगर हम अपनेको विरासतमें मिले धर्मके नामके साथ जुड़े हुअे घमण्ड और भावनाको न छोड़ सकें, तो कमसे कम दूसरे धर्मवालोंको अपने धर्मका लेबल न लगावें और अुनसे

www.vinoba.in

अपना धर्म छोड़कर हमारा धर्म मंजूर करनेका आग्रह तो किसी हालतमें न करें। अैसी संस्थायें पैदा करना, जो हिन्दके लोगोंको आपसमें न मिल सकनेवाले समूहोंमें बाँटनेका काम करें, अुनकी कुसेवा करना है।

अीश्वर और अपने बीचके मध्यस्थ (अेजेण्ट) के रूपमें अीसा या मुहम्मद साहबको मान लेनेसे खुदका नाम, रहन-सहन और शादी व विरासतके नियम बदलनेकी जरूरत नहीं है। धर्म पलटा करनेसे अगर पुराने समाजके साथका सम्बन्ध बिलकुल कट न जाय, तो अुसकी कड़वाहट मिट जाती है।

हिन्दू लोग भी व्यक्ति द्वारा की जानेवाली अीश्वरकी पूजा-अुपासनाके तरीकेको ज्यादा महत्व न दें, तो अच्छा हो। जिस तरह वे अेक हिन्दूके रामको पूजने और दूसरेके कृष्ण या शिवको पूजनेकी परवाह नहीं करते, अुसी तरह अगर अुनमेंसे कोअी अीसा या मुहम्मदको अपनी श्रद्धांजलि दे, तो अुन्हें अिसकी परवाह नहीं करनी चाहिये और अुसे अपने समाजसे बाहर नहीं करना चाहिये। अिससे दूसरे धर्मवालोंकी हिन्दुओंका धर्म बदलनेकी प्रेरणा ही खतम हो जायगी।

बम्बअी, २–१–'४९ **किशोरलाल मशरूवाला**

(अंग्रेजीसे)

तरक्की या बरबादी?

आज हिन्दुस्तानमें बड़ी तेजीसे तरक्की और सुधारकी योजनायें बन रही हैं। लेकिन क्या वे सब बुद्धिमानी और दूरंदेशीसे भरी हुअी हैं? यह अैसा सवाल है, जिस पर हमें ज्यादा गहराअीसे विचार करना चाहिये और हमारी जाँचके नतीजेको ज्यादासे ज्यादा लोगोंको बताना चाहिये।

आज मैं तीन मिसाल लूँगी :

१. घासवाली जमीनोंको जोतना।
२. नहरोंकी सिंचाअीको बढ़ाना।
३. बनावटी खाद तैयार करना।

पहलीके बारेमें यह संभव है कि जिस घासवाली जमीनके विकासकी योजना बनाअी गअी है, अुसमेंसे बहुतसी जमीन अब तक मवेशियोंका चरागाह रही हो — जैसे तराअी और खादरके हिस्से। हिन्दुस्तानके मवेशियोंके लिअे पहलेसे ही चरागाहों और पालने-पोसनेकी जगहोंकी बहुत बड़ी कमी है। अिसलिअे शायद अिन जमीनोंका सही विकास तो यह होगा कि अुनमें जानवरोंके खानेके लिअे ज्यादा अच्छी घास अुगाअी जाय और अुनके दाने-चारेसे सम्बन्ध रखनेवाली फसलें पैदा की जायँ। साथ ही अिन जमीनों पर बसनेवाले लोग अपने जानवरोंको अच्छी तरह पाल-पोस सकें और अुनकी तरक्की कर सकें। मुझे डर है कि आज अैसा नहीं होता। और अगर विकास या तरक्कीके नाम पर हिन्दुस्तानके चरागाहोंको घटाया जाता रहा, तो अेक दिन अैसा आयेगा जब गाय और अुसका वंश बरबाद हो जायगा। हम मौजूदा खेतोंमें कुदरती ढंगसे अच्छी तरह तैयार की हुअी खाद डालकर अुनकी अनाजकी अुपजको खूब बढ़ा सकते हैं। यह सच्चा और सहीसलामत तरीका है। लेकिन दुर्भाग्यसे अिसके नतीजे अितनी आसानी या अितनी तेजीसे साफ नहीं दिखाअी देते, जितने कि घासवाली जमीनोंको जोतनेके। लेकिन यह दूरंदेशीकी नीति है; और साथ ही गायको भी बचाती है, जिसके बिना खुद आदमीका ही नाश हो जायगा।

दूसरी मिसालके बारेमें ज्यादातर लोगोंको खतरोंका कोअी खयाल नहीं है। सिंचाअीकी बड़ी बड़ी नयी योजनायें शुरू की जा रही हैं। लेकिन यू० पी०, पंजाब और सिंधमें नहरोंकी सिंचाअीसे जो बरबादी हुअी है, अुसका हमने क्या पूरा अध्ययन किया है? अुन हिस्सोंमें हजारों लाखों अेकड़ अुपजाअू जमीन बंजर बन गअी है, और आज भी बंजर बनती जा रही है। हिन्दुस्तानकी कुछ अच्छीसे अच्छी जमीनें अूसर बन गअी हैं, अुनमें खार और सील लग गअी है और दूसरी बुराअियाँ पैदा हो गअी हैं — वे खेतीके लायक बिलकुल नहीं रह गअी हैं। जानकार लोगोंका कहना है कि अिसका कारण नहरोंकी दोषभरी सिंचाअी है। अगर हम भविष्य पर नजर रखकर योजना नहीं बनायेंगे, तो अिस क्षेत्रमें भी तरक्की आखिरमें बरबादीका ही रूप ले सकती है।

तीसरे मुद्देके बारेमें अिस विषयकी खोज करनेवाले वैज्ञानिकोंने अब अिस हकीकतको अच्छी तरह मान लिया है कि जिन फसलोंको बनावटी खाद दी जाती है, वे अुन फसलोंसे पोषणमें घटिया होती हैं, जिन्हें खेतों या खलिहानोंमें तैयार की हुअी कम्पोस्ट खाद दी जाती है। यह भी बताया जाता है कि बनावटी खादोंसे पैदा की जानेवाली तरकारियाँ और घास-चारा अिन्सानों और जानवरोंको नुकसान पहुँचाते हैं। साथ ही, बनावटी खादवाली मिट्टी कुछ बरस तक तो बहुत अुपज देती है, लेकिन आखिरमें अपना अुपजाअूपन खो देती है, जब कि कम्पोस्ट खादवाली मिट्टी दिनों दिन ज्यादा ताकतवर और अुपजाअू बनती जाती है। तब बनावटी खाद तैयार करनेवाले बड़े बड़े कारखाने क्यों कायम किये जायँ? यह नामकी तरक्की भी बरबादीके रास्ते ही ले जाती है।

मुझे डर है कि अिन योजनाओंमें लोगोंके भलेको सबसे बड़ी जगह नहीं दी जाती है। अिस सबका मतलब यह है कि हमें अपना सब काम बन्द करके यह नहीं सोचना चाहिये कि स्वराज पा लेनेसे अब हम आगे शोषणसे बचे रहेंगे। अिसके खिलाफ, हमें अिस बारेमें बहुत ज्यादा होशियार रहना होगा, क्योंकि यह भीतरसे किया जानेवाला शोषण पहलेके विदेशी शोषणसे ज्यादा खतरनाक है — क्योंकि अिसके साथ अूपरी देशभक्तिकी चकाचौंध होती है।

आज मैंने थोड़ेमें अिन तीन सवालों — घासवाली जमीनोंको जोतना, नहरों द्वारा सिंचाअी और बनावटी खाद — को सिर्फ छुआ ही है। मैं सरकारी जरियोंसे अिस बारेमें हकीकतें और आँकड़े अिकट्ठे कर रही हूँ। साथ ही, अगर लोग अिन बातोंके अपने निजी अनुभव 'आश्रम, पशुलोक, पो० ऋषिकेश, जिला देहरादून, यू० पी०' के पते मुझे लिख भेजेंगे, तो मुझे बड़ी खुशी होगी। जानकार लोग अिनकी बुराअियाँ समझते हैं और किसान अपने तजरबेसे अुन्हें जानते हैं। दोनोंके ज्ञान और अनुभवको जनताके सामने रखना चाहिये, ताकि जनमत जाग्रत किया जा सके और अुसके जरिये राजकाज चलानेवाले लोग अिसका ध्यान रख सकें कि तरक्की बरबादीकी तरफ नहीं ले जाती।

पशुलोक, ८–१–'४९ **मीराबहन**

(अंग्रेजीसे)

हिन्दुस्तानी प्रचार परीक्षायें

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धाकी ओरसे ली जानेवाली आगामी परीक्षायें रविवार ता. १७ अप्रैल १९४९ को होंगी। फीसके साथ अर्जी भेजनेकी आखिरी तारीख १० मार्च १९४९ है।

अिस बार परीक्षाओंकी फीसमें और पाठ्यक्रममें फेरफार किया गया है। ज्यादा जानकारी वर्धाके दफ्तरसे मिल सकेगी।

अमृतलाल नाणावटी
परीक्षा-मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

www.vinoba.in

जातिसे राष्ट्रकी ओर

'हरिजनसेवक' में प्रकाशित करनेके लिअे नीचेका प्रस्ताव मेरे पास आया है :

"कोकणस्थ वैश्य जाति-फण्डके ट्रस्टियोंकी यह साफ राय है कि सन् १९२१ में सासवणेमें जो 'कोकणस्थ वैश्य विद्याश्रम' नामकी संस्था कायम की गयी थी, वह अेक शिक्षा संस्था है, और अिसलिअे अुसकी व्यवस्था और संचालनका काम सीधे हमारे देशकी राष्ट्रीय सरकारके मातहत होना चाहिये। यह करना विशेष जरूरी अिसलिअे है कि अिस आश्रमको शुरू करनेमें तथा अिसका संचालन करनेमें जातिने सिर्फ कोकणस्थ वैश्योंसे ही दान नहीं लिया, बल्कि दूसरे हमदर्दी रखनेवालोंसे भी लिया था। अिसलिअे ट्रस्टियोंकी यह सभा तय करती है कि सासवणेकी शिक्षण संस्था, अुसकी स्थावर-जंगम जायदाद, फण्ड वगैरा सब कुछ शिक्षणका काम चलानेके लिअे सरकारको भेंटके रूपमें सौंप दिया जाय।"

ता० २३-१२-'४८ के दिन बुलाअी गअी मेनेजिंग ट्रस्टियोंकी असाधारण सभाने कायदेके मुताबिक यह प्रस्ताव मंजूर किया है और ता० ३० जनवरीको यह संस्था बाकायदा बम्बअी सरकारको सौंप दी जायगी। अुसके बाद सरकार अपनी सीधी निगरानीमें वहाँ 'गांधी विद्याश्रम' नामसे शिक्षण संस्था चलावेगी।

अिस प्रस्तावका पूरा महत्व समझनेके लिअे अिसका अितिहाससे सम्बन्ध रखनेवाला पहलू देखना जरूरी है। कोकणके वैश्योंकी अेक छोटीसी जाति है, जिसकी जनसंख्या करीब ७५००० होगी। महाराष्ट्रके दूसरे वैश्योंकी तरह ये वैश्य बाहरसे नहीं आये हैं, बल्कि यहींके रहनेवाले हैं। वे व्यापार करते हैं और बम्बअी और कोकणके जिलोंमें बसे हुअे हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि अिस सदीकी पहली बीसीमें युनिवर्सिटी शिक्षणके क्षेत्रमें अिस जातिने खूब तरक्की की थी। व्यापारी शिक्षण तो ये लोग हमेशा लेते ही थे, फिर वह अनुभवसे मिले या मदरसेके जरिये। आज हम अिसे बिचले दर्जेकी खुशहाल जाति कह सकते हैं। यह सब जानते हैं कि आम तौर पर व्यापारी लोग राजकीय और सामाजिक मामलोंमें जैसा चलता है वैसा ही चलने देनेके आग्रही होते हैं, और राजनीतिक हलचलोंको शक भरी नजरसे देखते हैं। अिस जातिके पास सन् १९२१ तक काफी पैसे अिकट्ठे हो गये थे। अुन्हें अुसने अपनी जातिके लोगोंके भलेके लिअे अलग अलग तरहसे खर्च किये। लेकिन सन् १९२१ में सरकारके साथ असहयोग करनेकी बात पैदा हुअी। अुस समय अिसी जातिके अेक भाअी आचार्य जे० जी० ढवण अुर्फ भाअी ढवण बी० अे० की क्लासमें पढ़ते थे। वे अपने मनमें अपनी जातिके लड़कोंके लिअे अेक गृहशाला खोलनेका अिरादा कर रहे थे; और बी० अे० की डिग्री लेनेके बाद अपने अिस अिरादे पर अमल करनेकी अुनकी अिच्छा थी। लेकिन डिग्री मिलनेके पहले ही गांधीजीके अहिंसक असहयोग की आंधी आअी और अुसमें वे घिर गये। वे अपना जोश न दबा सके और अुन्होंने कालेज छोड़ दिया। अब अुन्होंने अपने मनमें तय किया कि मैं जो संस्था चलाना चाहता हूँ, अुस पर सरकारी बन्धन या सरकारी परीक्षाओंकी झंझट न होनी चाहिये, और अुसे असहयोग आन्दोलनका अेक अंग बनना चाहिये। लेकिन अुन्हें अपने मित्रों और जातिभाअियोंको यह बात समझाकर राजी करना था; और कोअी भी समझ सकता है कि यह काम आसान नहीं था। लेकिन आचार्य ढवण तो बड़े परिश्रमी और लगनसे काम करनेवाले बनिये हैं। अिसलिअे जबतक अुनकी बात मंजूर न हुअी, अुन्होंने अपना आग्रह चालू रखा। शुरूमें तो मेनेजिंग ट्रस्टी लोग असहकारी संस्था चालू करनेमें बहुत आगापीछा करते रहे। लेकिन अेक घटना अैसी घटी, जिससे ट्रस्टी लोग तुरन्त असहकारी संस्था शुरू करनेके फैसले पर आ गये।

भाअी ढवणको अपने अेक धनिक जाति भाअीने बगैर किसी शर्तके २०,००० रुपये दानमें दिये। ये दान देनेवाले भाअी बहुत दिनोंसे भाअी ढवणको जानते थे। और अुन्हें अुनकी योग्यता पर पूरा विश्वास था। दान जो भी बगैर किसी शर्तके दिया गया था, लेकिन फिर भी अुसके पीछे अेक बात साफ थी। जिससे ट्रस्टी लोग समझ गये कि अब हमारा यह धर्म हो गया है कि आचार्य ढवणको अुनकी योजनाके मुताबिक नयी संस्था शुरू करने दी जाय। अिस तरह १९२१ में जातिके फण्डमेंसे और खास करके जातिके लड़कोंके लिअे यह संस्था शुरू की गयी। सासवणे बम्बअीके दक्षिणमें कुछ ही मील दूर समुद्र किनारे पर अेक छोटासा गाँव है। यह बहुत ही सुन्दर जगह है। जिसके पीछे हरेभरे पहाड़ हैं और सामने समुद्रकी रेतका विशाल मैदान है।

अिस संस्थाको कअी अुतार चढ़ावोंसे गुजरना पड़ा है। कभी यह खूब फूलती-फलती, तो कभी बड़ी बुरी हालतमें हो जाती, और कांग्रेसके प्रति वफादार रह कर हमेशा अुसकी पुकार पर राष्ट्रीय आन्दोलनोंमें कूद पड़ती थी। सरकारने भी अिसपर अेकसे ज्यादा बार कब्जा कर लिया था। गांधीजी कोअी भी नयी बात रखते कि आचार्य ढवण और अुनके विद्यार्थी हर तरहकी मुसीबत अुठाकर अुस पर अमल करना अपना फर्ज समझते थे। अेकन्दर देखा जाय तो जाति-फण्डके ट्रस्टियोंने भी अुनका साथ दिया था। शुरूमें जिसने २०,००० रुपये दान दिये थे, अुसीने कुछ समय बाद फिर ३०,००० और दिये। कितने ही दूसरी जातिके लोगोंने भी अच्छी रकमें दानमें दीं। ट्रस्टी लोग संस्थाको सिर्फ जातिके फण्डमेंसे ही पैसे नहीं देते थे, बल्कि अुसके लिअे जातिके बाहरसे भी पैसा अिकट्ठा करते थे। खास करके यह संस्था कोकणस्थ वैश्योंके लिअे थी, लेकिन अुसमें दूसरी जातिके लड़के भी भरती किये जाते थे। अितना होने पर भी कायदेकी नजरसे यह अेक विशेष जातिकी संस्था थी और अुसका संचालन भी कोकणस्थ वैश्योंके हाथमें ही था।

अिस संस्थामें गांधीजी ३-३-'२७ को गये थे। अुस मुलाकातकी रिपोर्ट २०-३-'२७ के 'नवजीवन' में प्रकाशित हुअी है। अिस रिपोर्ट परसे मालूम होगा कि अिस संस्थाको देखकर गांधीजीको कितना आनन्द हुआ था। अुस वक्त अिस संस्थामें विद्यार्थियोंकी तादाद भी खूब थी। आठ दिन तक दूध, घी और रोटी न खाकर यहाँके जवान विद्यार्थियोंने रु० ६३-३-० बचाये थे और वह रकम बापूजीको भेंटमें दी थी। बापूजीको नौजवानोंका यह त्याग बहुत पसन्द आया था।

'हिन्द छोड़ो' का आन्दोलन खतम हो जानेके बाद आचार्य ढवण जेलसे छूटे। अुसके बाद तो अुनकी नजर बहुत ही व्यापक हो गयी थी। वे श्री जमनालालजी बजाजके बड़े प्रशंसक और अनुयायी थे। जातपाँतके बारेमें भी अुनके विचारोंमें तरक्की हो रही थी। अुन्हें यह महसूस हुआ कि हिन्द जिस नअी समाज-व्यवस्थाका विकास करना चाहता है, अुसमें किसी छोटीसी जाति या अुसके फण्डके लिअे जगह नहीं है। अिसलिअे वे 'कोकणस्थ वैश्य विद्याश्रम' को सिर्फ हकीकतमें ही नहीं, बल्कि कायदेकी नजरसे भी राष्ट्रीय संस्था बना देनेके सम्बन्धमें सोचने लगे। और अपने अिस विचारका जातिवालोंमें वे प्रचार करने लगे। १५ अगस्त १९४७ को हिन्दके आज़ाद होनेके बाद अुन्हें लगने लगा कि अब असहकारी संस्थाके लिअे हिन्दमें कोअी जगह नहीं है। अितना ही नहीं, अुन्हें यह भी लगा कि अपनी कायम की हुअी संस्थाको कांग्रेस सरकारको सौंप देना हमारा फर्ज है। और जब गांधीजीका खून हुआ और अुसके बाद महाराष्ट्रमें जो कुछ घटनायें घटीं, अुस परसे तो संस्थाको सरकारको सौंप देनेका अुन्होंने फैसला कर लिया। अुन्होंने तय कर लिया कि अिस संस्थामें किसी भी तरहके कौमी लक्षण न रहने चाहियें और अुसे पूरी तरह राष्ट्रीय संस्था बन जाना चाहिये, या अुन्हें अुसकी जवाबदारीसे मुक्त कर दिया जाय। धीरे धीरे अुन्होंने सब मेनेजिंग ट्रस्टियोंको हमराय बना लिया। और अुसका नतीजा अूपर दिया हुआ प्रस्ताव है।

www.vinoba.in

किसी भी जातिके अपनी जायदाद और फण्ड परका हक राजीसे सरकारको सौंप देनेका, और कुछ नहीं तो शिक्षणके क्षेत्रमें अपनी कौमी दृष्टि छोड़ देनेका तथा देशकी राष्ट्रीय सरकार पर पूरा विश्वास रखनेका शायद यह पहला ही सक्रिय अुदाहरण है। स्वभावसे ही यह जायदाद 'सर्वोदय-दिन' पर सरकारको सौंपी जायगी। जाति और मेनेजिंग ट्रस्टियोंको हम बधाअी देते हैं। लेकिन भाअी ढवणके लिअे तो यह शब्द छोटा माना जायगा। वे तो अिस संस्थाको अपने २८ वर्षकी मेहनतकी आखरी सीमा मानते हैं, जहाँ अुन्हें पूरा सन्तोष हुआ है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, बम्बअी सरकार वहाँ नअी तालीमके अुसूलके आधार पर बुनियादी शिक्षणकी संस्था शुरू करनेकी बात सोच रही है। आचार्य ढवण अिस नअी संस्थाके भी मार्गदर्शक रहेंगे।

बम्बअी, १३-१-'४९ किशोरलाल मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

६ फरवरी १९४९

बेअीमानीकी बाढ़

बम्बअीके अेक दुकानदारको मैं जानता हूँ, जिन्होंने अीमानदारीके लिअे बम्बअीमें अच्छा नाम कमाया है। अेक जलसेमें वे सभापति थे। वहाँ कालाबाजारीके सिलसिलेमें अुन्होंने कहा कि जिस तरह कानूनसे रिश्वत लेनेवाला और देनेवाला दोनों गुनाहगार समझे जाते हैं, अुसी तरह कालाबाजार करनेवाला दुकानदार और खरीदार दोनों बुरे समझे जाने चाहियें। अुन्होंने अपना अनुभव बताया कि किस तरह अपनी ही जरूरतोंका खयाल करनेवाले खरीदार कानूनसे ज्यादा माल प्राप्त करनेके लिअे दुकानदारको ज्यादा कीमत देनेका लालच बताकर बेअीमानीका सबक देते हैं। जैसे कि, पेट्रोलकी कीमत दो रुपये गैलन होते हुअे भी परमिटसे ज्यादा पानेके लिअे बारह-पन्द्रह रुपये देनेके लिअे लोग अुसे ललचाते हैं। मामूली दुकानदारका अैसे लालचमें फँस जाना अचरजकी बात नहीं।

अुनकी बातमें जरूर कुछ सचाअी है। लेकिन जो मिलावट करते हैं, अुन व्यापारियों और दुकानदारोंके बचावमें क्या कहा जा सकता है? दूधमें पानी मिलानेका धन्धा तो जमानेसे चलता आया है। अुनकी मेहरबानी है कि अुसमें अक्सर सिर्फ पानी ही मिलाते हैं, जो कि अेक निर्दोष चीज है। लेकिन घीमें वनस्पतिकी जो मिलावट की जाती है, अुसमें सिर्फ बेअीमानी ही नहीं, बल्कि खानेवालेका नुकसान भी होता है। हो सकता है कि वह साफ साफ जहर न हो। समझदार लोग तो सीधा-साधा तेल खाकर अुससे अपना बचाव भी कर सकते हैं। लेकिन आजकल तेलमें भी मिलावट होने लगी है। और वह भी अेक न खाने लायक जहरीली चीजके साथ, जिसे 'सफेद तेल' कहते हैं। यह सफेद तेल मिट्टीके तेलका ही सजाया और साफ किया हुआ रूप है। शुद्ध खाने लायक तेल भी शुद्ध घी की तरह अब बाजारमें न मिल सकनेवाली चीज बन गया है। अैसी चिट्ठियाँ मुझे बार बार मिलती रहती हैं।

अिससे क्या समझा जाय? क्या व्यापारियोंके दिलमेंसे धर्म — लोगोंके प्रति फर्ज — और नीतिका सब खयाल ही अुठ गया है? क्यों वे अितने पत्थर दिल, अितने खुदगरज, अपने भाअियोंके सुखकी तरफ आँखें बन्द करके चलनेवाले और अमर्याद बन गये हैं?

१९४६-४७ में देशभरमें जो भाअी-भाअीकी खूँरेजीकी बड़ी बाढ़ आ गअी थी, अुसे हम सब जानते हैं। अुसको रोकनेके लिअे गांधीजीको पूर्व बंगालसे काश्मीर तक "करूँगा या मरूँगा" का निश्चय करके दौरा करना पड़ा था, और दो बार लम्बा फाका (अुपवास) रखना पड़ा था। और आखिरमें वे अपना प्राण देकर ही अुसे रोक सके।

क्या यह तो नहीं होगा कि हमारे बेपार और जीवनके दूसरे कामोंमें बेअीमानी और समाजका नुकसान करनेवाली दूसरी बुराअियोंकी जो बाढ़ आ गयी है, वह भी कभी सच्चे आदमियोंका बलिदान लेकर रहेगी? क्या जब तक कोअी परमात्माका भक्त और लोक-सेवक अपनी बड़ी तपश्चर्यासे जबरदस्त धक्का नहीं देता, तब तक बेपारियोंके दिल जाग न सकेंगे?

हम सबको यह खयाल करनेकी, समझनेकी और पक्की तरह दिलमें बिठा लेनेकी जरूरत है कि हम आज जहाँ पर हैं, अुससे ज्यादा अूँची नीतिकी सतह पर हमें जाना ही होगा। हमारी आजकी गिरी हुअी हालत हमें सब तरफसे अन्धेर, अव्यवस्था, अराजकता (धांधली) और आखिरमें विनाशकी ओर ही ले जा सकती है। माली हालत सुधरनेसे पहले अगर हमारी नैतिक हालत नहीं सुधरेगी, तो हमारी स्थिति चीनसे अच्छी न रहेगी। अिसलिअे जो भी सर्वोदयके आदर्शमें माननेवाले हों, अुन्हें बड़ी निष्ठा और सच्चे दिलसे काम करना होगा। हमारी जनताकी नीति और समाज-धर्मकी बुद्धि तिलभर भी अूँची अुठानेके लिअे जो कुछ बलिदान देना पड़े, वह थोड़ा ही समझा जाय। बेपारी वर्गके लिअे यह अेक गौरवकी बात मानी जाती है कि गांधीजी अुन्हींके समाजमें पैदा हुअे थे। मेरी अुनसे नम्रताके साथ विनती है कि वे अपने कान थोड़ेसे अन्दर कर लें, और अपने अन्तःकरणकी आवाजको सुननेकी कोशिश करें। अुनके बुरे कामोंसे जब दूसरोंका नुकसान होगा, तो अुनका खुदका सलामत रहना भी असम्भव है।

वर्धा, २९-१-'४९ किशोरलाल मशरूवाला

टिप्पणियाँ

पं० जवाहरलाल और सरदार वल्लभभाअी

हमारे प्रधान मंत्री और अुपप्रधान मंत्री पिछले कुछ समयसे अैसे भाषण दे रहे हैं, जो बड़े महत्वके, शिक्षा देनेवाले, अकलमन्दी भरे और प्रेरणा देनेवाले होते हैं। प्रधान मंत्री अन्तर राष्ट्रीय क्षेत्रमें और अुप प्रधान मंत्री देशके भीतर क्रान्तिकारी (अिन्क़लाबी) फेरबदल कर रहे हैं और बड़े बड़े अुसूल और नीतिके दरजे कायम कर रहे हैं। दोनों मिलकर हमारे देशको दुनियाके कामकाजमें जिम्मेदारी और महत्वका वह बड़ा स्थान लेनेके लिअे तैयार कर रहे हैं, जो पुराने जमानेमें अुसका था और जो अुसकी भौगोलिक स्थिति, बहुत बड़ी आबादी, अूँची परम्पराओं और सबसे बढ़कर गांधीजी जैसे युगपुरुषको पैदा करनेके कारण कुदरती तौर पर अुसका है।

परिपक्व बुद्धिवाले सरदार वल्लभभाअी पटेल कांग्रेसियों और हिन्दके लोगोंसे बेअीमानी और गन्दगी छुड़वानेकी और अुन्हें सुधारनेकी कोशिश कर रहे हैं। और पंडित जवाहरलाल नेहरूने हिन्देशियाके सवालके बारेमें जिस फुर्तीसे काम किया और अपने अूँचे आदर्शवाद तथा अन्तर राष्ट्रीय राजनीतिकी गहरी समझसे अेशियाअी देशोंकी जो नेतागिरी की, अुससे न सिर्फ हमें अपने प्रधान मंत्रीके लिअे गर्व होना चाहिये, बल्कि अिस बातका भी पक्का विश्वास हो जाना चाहिये कि गांधीजीका पंडित नेहरूसे बड़ी बड़ी आशायें रखना कितना सही था।

मैं चाहता हूँ कि अिन नेताओंके भाषणोंके कमसे कम महत्वके हिस्से समय समय पर 'हरिजनसेवक' में दिये जा सकें। लेकिन अुनके महत्वपूर्ण होते हुअे भी जगहकी कमी मुझे अैसा करनेसे रोकती है। 'हरिजनसेवक' में जो चीज छपती है, वह मेरे विश्वाससे बड़े महत्वकी होती है और फिर भी दूसरे पत्रोंमें नहीं मिल सकती। नेताओंके भाषण खास खास रोजाना अखबारोंमें तुरत और पूरे पूरे छपते हैं, और 'हरिजनसेवक' को अुनके पुराने पड़ जानेके बाद अिनमेंसे किसी अखबारसे लेकर सिर्फ अुनकी नकल ही देनी होगी। अिसलिअे अिन रोजाना अखबारोंमें ही अुन भाषणोंको पढ़ना ज्यादा अच्छा होगा।

www.vinoba.in

मुझे आशा है कि 'हरिजनसेवक' के पढ़नेवाले लोग अिन भाषणोंको दूसरे अखबारोंमें जरूर पढ़ेंगे।

बम्बअी, २१-१-'४९

डरबनका दंगा

कुछ दिनों पहले डरबनमें अेक गंभीर जातीय (नसली) दंगा हो गया। अिससे वहाँ और यहाँ दोनों जगहके हिन्दुस्तानियोंकी आँखें खुल जानी चाहियें। अगर हम हिन्दुस्तानमें शान्ति और अेकतासे नहीं रह सकते, तो बाहर भी नहीं रह सकते। अगर हम यहाँ समानता और अिन्साफ नहीं कायम करते, तो दूसरी जगह तो हम अुन्हें पा ही कैसे सकते हैं?

मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तानी लोग दक्षिण अफ्रीका, पूर्व अफ्रीका और दूसरी जगहोंमें अपनी मातृभूमिकी तमाम बुराअियोंकी नकल कर रहे हैं। जैसे, दक्षिण और पूर्व अफ्रीकामें भी हिन्दू महासभावादी और पाकिस्तानी या मुस्लिम लीगी हैं। अचरज तो यह है कि वे वहाँ कौनसा हिन्दूराज और मुस्लिमराज लेना या बँटवारा करवाना चाहते हैं! मैं समझता हूँ कि दक्षिण अफ्रीकाके ज्यादातर मुसलमान हिन्दमें हिन्दी संघके नागरिक हैं; और अुन्हें अपने संरक्षणके लिअे हिन्दी सरकारका सहारा लेना चाहिये। लेकिन मुझे कहा गया है कि वहाँ वे अपनेको हिन्दी संघसे अलग पाकिस्तानके नागरिक मानते हैं। यह बात वहाँके रहनेवाले हिन्दू-मुसलमानोंके या आम तौर पर तमाम रंगीन लोगोंके हितोंको नुकसान पहुँचानेवाली ही नहीं है, बल्कि मजाककी चीज भी है। कारण, अुन्हें समझना चाहिये कि तमाम रंगीन लोगोंके हितके लिअे हिन्दी संघ और पाकिस्तान दोनोंको हिलमिल कर काम करना चाहिये। अुन्हें यह खयाल होना चाहिये कि अगर वे दक्षिण अफ्रीकामें अपने पूरे नागरिक हक लेना चाहते हैं, तो दक्षिण अफ्रीकाके तमाम अेशियावासियोंको अेक क़ौम — अेक राष्ट्रकी तरह संगठित होना चाहिये। और यह अेशियाअीपन भी तभी तक रखना चाहिये, जब तक अुन्हें अफ्रीकाके राज्योंमें नागरिक हक्क नहीं मिल जाते। अफ्रीकामें अुनका हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी, अफगानी, बर्मी, चीनी या दूसरे किसी देशका होना बहुत महत्वकी बात नहीं मानी जानी चाहिये। अुसे तो सिर्फ अेक अितिहासकी बीती बात समझना चाहिये। अुसे अितना भी महत्व नहीं दिया जाना चाहिये, जितना कि हिन्दुस्तानमें सिन्धी, पंजाबी, बंगाली या गुजरातीको दिया जाता है। अगर वे किसी देशमें पैदा होने या अुसके नागरिक होनेको विशेष महत्व देते हैं, तो अुसमें अुन्हींका नुकसान है। अुनकी सरकार, जो अुनके हक्कोंका विरोध कर रही है, अुनके अिन आपसी मतभेदों और अीर्ष्या-द्वेषका आसानीसे फायदा अुठायेगी। अगर अेशियावासी होनेके नाते वे सब अेक हो जाते हैं, तो अुन्हें अफ्रीकाके तमाम रंगीन लोगोंके साथ अेक होना भी मालूम हो जायगा; और जब सब रंगीन लोग अेक हो जायँगे, तो गोरों और रंगीन लोगोंमें किस तरह मेल-जोल और अेका पैदा किया जाय, यह भी वे ढूँढ़ निकालेंगे। और यह गोरों व रंगीनोंका भेद मिटाना ही अुनका आखिरी मकसद होना चाहिये। हमें याद रखना चाहिये कि रंग, जाति, धर्म और मूल वतनका भेद होते हुअे भी सारा मानव समाज अेक है।

बम्बअी, २१-१-'४९

धन्यवाद

मेरी बिनती मानकर जिन लोगोंने ३० जनवरीके अंकके लिअे खास लेख भेजे, अुनको मैं बहुत धन्यवाद देता हूँ। सबसे पहला लेख मुझे हिन्दके सबसे पहले नागरिक — गवर्नर जनरलसे मिला। मुझे अफसोस है कि कुछ लेख बहुत देरसे मिले, अिसलिअे वे अुस अंकमें नहीं दिये जा सके। सुभीता मिलते ही वे छापे जायँगे। मुझे आशा है कि लेखक देरके लिअे मुझे माफ करेंगे।

वर्धा, २९-१-'४९

१२ फरवरी

सर्वोदय समाजकी ओरसे मुझे पाठकोंको १२ फरवरीका दिन मनानेके बारेमें बताये गये सुझावोंकी याद दिलानेके लिए कहा गया है जो १६ जनवरीके 'हरिजनसेवक'में छपे हैं। वे अिस तरह हैं:

> "१२ फरवरीके दिन जहाँ जहाँ पूज्य बापूजीके फूलोंका विसर्जन किया गया हो, अुन सभी जगहों पर स्थानीय मेले किये जायँ। अिन मेलोंके मौके पर भी, जहाँ तक हो सके, प्रत्यक्ष अमली कार्यक्रम, प्रार्थना, व्याख्यान, प्रवचन और साहित्य प्रचार वगैराके जरिये जनतामें सर्वोदयके विचार फैलाये जायँ।"

मैं समझता हूँ कि वर्धाके आसपासके लोग अपनी भजन मण्डलियोंके साथ दो पहरसे पहले पवनारमें अिकट्ठे होंगे। दोपहरमें विनोबाजीसे प्रार्थनाका संचालन करनेकी अुम्मीद की जाती है। आशा है कि जो यात्री वहाँ जायँगे, वे गांधीजीकी यादगारके रूपमें खड़े किये गये स्तंभके नीचे खुदके काते हुअे सूतकी अेक गुंडी रखेंगे। हर गुंडी ६४० तारकी होगी और अुसके साथ कातनेवालेका नाम और पता होगा। मेरा सुझाव है कि अिन्तजाम करनेवाले लोग हरिजनों, गैर-हिन्दुओं और शरणार्थियोंको खास तौर पर अिज्जतकी जगह दें।

(अंग्रेजीसे)

अेक अच्छी मिसाल

'युगसंदेश' मराठी भाषाका धुलिया (बम्बअी प्रान्त) से निकलनेवाला अेक छोटासा साप्ताहिक है। जनवरीके पहले हफ्तेमें श्री विनोबाका कुछ दिनके लिअे धुलियामें मुकाम हुआ। वहाँ पर श्री महादेवभाअीकी स्मृति (याद)में 'महात्मा गांधी तत्त्वज्ञान मन्दिर' नामकी अेक संस्था कायम की गअी है। अुसके आँगनमें रोज शामको प्रार्थनाके बाद विनोबाजीके प्रवचन होते रहे। 'युगसंदेश' के सम्पादकोंने सोचा कि अपने अखबारमें अिन दिनों मामूली लेख या बाजारू गप-शप देनेके बजाय श्री विनोबाके भाषणोंकी रिपोर्ट देनेसे ज्यादा फायदा होगा। अिसलिअे अुन्होंने अिन दो-तीन सप्ताह तक अपने अखबारका बहुत बड़ा हिस्सा विनोबाजीके भाषणोंमें ही रोक लिया। अैसे छोटे अखबारोंका प्रचार जिलेके देहातोंमें होता है। अिस कामसे 'युग-संदेश' ने विनोबाजीके अुपदेशको धुलियाके गाँवोंमें पहुँचानेका अच्छा काम किया। छोटे शहरों और कस्बोंके अखबारोंके लिअे 'युग-सन्देश' ने अेक अच्छी मिसाल पेश की है।

बम्बअी, १९-१-'४९

ગુજરાતી લિપિકો નાગરીકા રૂપ દિયા જાય

જૂનાગઢમેં હાલમેં હી ગુજરાત સાહિત્ય પરિષદ હુઅી થી। અુસકા છઠા પ્રસ્તાવ નીચે દિયા જાતા હૈ:

> "સારે દેશકે હિતકો દેખતે હુઅે યહ જરૂરી હૈ કિ સભી પ્રાન્તીય ભાષાઓંકે લિઅે નાગરી લિપિ હી મંજૂર કી જાય। ગુજરાતી લિપિમેં ના અક્ષર નાગરી લિપિસે અલગ ઢંગસે લિખે જાને લગે હૈં। અિસલિઅે અિસ પરિષદકા આગ્રહ હૈ કિ અુનમેં અુચિત ફેરબદલ કરકે ગુજરાતી લિપિકો નાગરીકા રૂપ દિયા જાના ચાહિયે। ઔર યહ પરિષદ સમ્મેલન-પરિષદકો સૂચિત કરતી હૈ કિ ગુજરાતી લિપિકે અક્ષર નાગરીકે રૂપમેં હી લિખે જાયઁ। અુનકે સિર બાઁધના યા ન બાઁધના યહ લેખકકી મરજી પર રખા જાય। ઔર પરિષદ અિસ સમ્બન્ધમેં યોગ્ય કાર્યવાઅી કરે।"

પ્ર૦ — પ્રો. હિમ્મતલાલ કામદાર

અનુ૦ — શ્રી. ભરતરામ મેહતા

ઊપરકા પ્રસ્તાવ પઢકર મુઝે સ્વાભાવિક હી આનન્દ હુઆ। મુઝે યહ અુમ્મીદ નહીં થી। શ્રી કાકાસાહબકે ઔર મેરે આગ્રહસે કરાચી સમ્મેલનમેં અિસ સમ્બન્ધમેં અેક પ્રસ્તાવ પાસ હુઆ થા। લેકિન મુઝ પર અૈસી છાપ પડી થી કિ સાધારણ તૌરસે ગુજરાતકા વિદ્વાન વર્ગ અિસ મામલેમેં તટસ્થ હૈ, અિસકા વિરોધી

www.vinoba.in

ભી હૈ । ઇસલિએ અપને આપ હી પાસ હુએ ઇસ પ્રસ્તાવકો દેખકર મુઝે ખુશી હોતી હૈ ।

મુઝે આશા હૈ કિ પ્રસ્તાવમેં લિખે મુતાબિક પરિષદ ઇસ બારેમેં યોગ્ય કાર્રવાઈ કરેગી ઔર શિક્ષા વિભાગોં ઔર પ્રકાશન સંસ્થાઓંકે જરિયે ઇસ સુધારકા પ્રચાર કરાવેગી ।

ઇસીકે સાથ અગર વહ છોટી 'इ' કી માત્રા (ि)કા ઐસા આકાર તય કરે, જિસસે વહ અક્ષરકી દાહિની ઓરસે લગાઈ જા સકે, તો યહ ભી એક ઉચિત સુધાર હી હોગા ।

બમ્બઈ, ૨૧–૧–'૪૯ કિ૦ મશરૂવાલા

(ગુજરાતીસે)

'ખાદીજગત્' ઔર ગોસેવા

ગોસેવા સંઘને 'ખાદીજગત્' માસિકકો અપના મુખપત્ર બના લિયા હૈ । ગોસેવા સંઘકી અધિકૃત જાનકારી 'ખાદી જગત્'સે મિલા કરેગી । જયપુર સમ્મેલનકા પૂરા વિવરણ ફરવરીકે અંકમેં આ રહા હૈ । ચરખાસંઘ ઔર તાલીમી સંઘકા ભી મુખપત્ર વહી હૈ । સારે વિધાયક કાર્યોંકી જાનકારી ઉસમેં રહતી હૈ । અતઃ ગોસેવા સંઘસે દિલચસ્પી રખનેવાલે સારે ભાઈ-બહનોંકો 'ખાદી જગત્' સેવાગ્રામ-વર્ધાકા ગ્રાહક બન જાના ચાહિયે । પૃષ્ઠસંખ્યા ૫૬ : સાલાના ચન્દા — રુ. ૬ હૈ ।

તા. ૨૬–૧–'૪૯

રાધાકૃષ્ણ બજાજ
મંત્રી, ગોસેવા સંઘ

सत्य और अहिंसा — २

सत्य

१. सत्यके कोरे सिद्धान्तका तब तक कुछ भी महत्व नहीं रहता, जब तक वह उन मनुष्योंमें, जो उसकी हिमायतके लिये अपने प्राणोंका भी यज्ञ करनेको तैयार रहते हैं, मूर्तस्वरूप नहीं प्राप्त कर लेता । (हिन्दी नवजीवन, २५–१२–'२१, पृ. १४९)

सत्यको अलग अलग रूपोंमें देखना

२. परमेश्वर भी क्या हरअेक मनुष्यको अलग अलग रूपोंमें नहीं दिखाओी देता? फिर भी हम जानते हैं कि वह अेक ही है । मगर सत्य ही परमेश्वरका सही नाम है । अिससे जिसे जो सत्य मालूम हो, यदि वह अुसीके मुताबिक बरते, तो अुसमें वह दोषसे मुक्त है । अितना ही नहीं, मगर वही अुसका कर्तव्य है । फिर वैसा करनेमें यदि अुसकी भूल हो रही हो, तो वह भी सुधर ही जावेगी । क्योंकि सत्यकी खोजमें तपश्चर्या समाओी रहती है, यानी खुदको दुःख सहन करना होता है; कभी अुसमें मरना भी रहता है । अुसमें स्वार्थकी जरा भी बू नहीं रहती । यह आज तक नहीं हुआ कि अैसी निःस्वार्थ खोज करनेवाला यदि कभी भटक गया, तो वह आखिर तक अुसी गलत रास्ते पर चलता रहा । जहाँ कोओी गलत रास्ते पर जाता है कि अुसे ठोकर लगती ही है; जिससे फिर वह सीधे रास्ते आ जाता है । (मंगलप्रभात, २२–७–'३०, पृ. ११–१२)

३. स० — आपके सत्याग्रहके सिद्धान्तको जहाँ तक मैं समझता हूँ, अुसमें सत्यकी खोज करते रहने और अुसे पानेके लिये आग्रह है । अुसमें आप अपने आपको ही कष्ट देते हैं, दूसरोंको नहीं । दूसरोंके साथ आप किसी तरहकी हिंसा नहीं करते ।

ज० — आप ठीक कह रहे हैं ।

स० — सत्यकी खोजमें कोओी कितनी ही निष्ठासे कोशिश क्यों न करे, फिर भी सत्यके बारेमें अुसके विचार दूसरोंसे अलग हो सकते हैं । अुस हालतमें सत्यका निश्चय कौन करेगा?

ज० — खोज करनेवाला खुद ही वह निश्चय करेगा ।

स० — तब तो सत्यके बारेमें अलग अलग विचार होंगे । क्या अिससे गड़बड़ी नहीं पैदा होगी?

ज० — मैं नहीं सोचता कि अैसा होगा ।

स० — सत्यकी निष्ठापूर्ण खोज क्या हर व्यक्तिके बारेमें अलग अलग होती है?

ज० — अिसी लिअे तो सत्याग्रहके साथ अहिंसाके अंशकी जरूरत है । यदि अहिंसा न हो तो बड़ी गड़बड़ी मचेगी, और अिससे भी ज्यादा खराबी होगी । (यंग अिण्डिया — १९१९–२२, टागोर अेण्ड कंपनीका संस्करण, पृष्ठ २९)

सत्यका फैलाव

४. स० — जब कि हम जानते हैं कि सत्यकी खोज सीमित है, अुस हालतमें अुसे दुनिया पर लादनेके बजाय क्या अपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिये?

ज० — आप कितनी ही कोशिश करें, तो भी सत्यको अिस तरह घेरेमें नहीं बाँध सकते । जिस तरह सूर्य अपना प्रकाश नहीं छिपा सकता, अुसी तरह सत्यकी हर अभिव्यक्तिमें प्रसारके बीज होते हैं । (स्टडीज़ अिन गांधीज़म, पृ. २०६)

५. हम चाहें या न चाहें, आध्यात्मिक अनुभवोंको हम जीवनमें आचरणके जरिये ही अनुभव कर सकते हैं, वाणीके जरिये नहीं । वाणी तो हमारे अनुभव प्रकट करनेका अेक बहुत ज्यादा अधूरा साधन है । आध्यात्मिक अनुभव विचारसे भी गहरे होते हैं । (साबरमती, १९२८, पृ. १९)

प्रेमके लिअे अपनी मरजीसे दुःख अुठाना

६. सत्यकी खोजके शुरू शुरूके दिनोंमें ही मुझे पता लगा था कि अपने विरोधीके सामने सत्याग्रह करनेमें अुसे दुःख देनेकी गुंजायश ही नहीं है । अुसे तो हमें धीरज और हमदर्दीसे ही अुसकी गलतीसे छुड़ाना है । क्योंकि जो चीज अेकको सत्य मालूम होती है, वही दूसरेको असत्य (गलत) मालूम हो सकती है । और धीरजका मतलब तो खुदको तकलीफ देना ही है । अिसलिअे अिस अुसूलका मतलब यह हुआ कि सत्य अपने विरोधीको तकलीफ देकर नहीं, बल्कि खुदको तकलीफ देकर सिद्ध करना चाहिये । (यंग अिण्डिया, १९१९–२२, टागोर अेण्ड कं.का संस्करण, पृ. ६)

७. सत्याग्रही सिर्फ अपने चरित्रबलसे और अपने आपको तकलीफ देकर अपने विरोधीका हृदय बदलना चाहता है । जितना ही वह तकलीफ अुठायेगा और जितना ही वह शुद्ध होगा, अुतनी ही अुसकी तरक्की होगी । (यंग अिण्डिया, १८–९–'२४, पृ. ३०६)

८. तकलीफ अुठाकर ही व्यक्तिकी तरह राष्ट्र भी बनाये जा सकते हैं, और किसी तरह नहीं । दूसरोंको तकलीफ देकर आनन्द नहीं मिलता; वह तो अपनी मरजीसे खुद तकलीफ सहनेसे ही मिलता है । (यंग अिण्डिया, ३१–१२–'३१, पृ. ४१८)

९. जो तकलीफ खुशीसे सहन की जाती है, वह तकलीफ नहीं रहती । वह तो अैसे आनन्दमें बदल जाती है, जिसे शब्दोंमें प्रकट नहीं किया जा सकता । (यंग अिण्डिया, १३–१०–'२१, पृ. ३२७)

सत्याग्रह

१०. मेरे पास कोओी निश्चित अुसूल नहीं, जिसके सहारे मैं चल सकूँ । मैंने सत्याग्रहका शास्त्र पूरी तरह तैयार नहीं कर लिया है । अभी भी मैं उसे खोज रहा हूँ । अगर आपको प्रेरणा होती हो, वह आपको भी अपील करती हो, तो आप भी खोजमें मेरे साथ आ सकते हैं । (हरिजन, २७–५–'३९, पृ. १३८)

११. यदि हमें प्रगति करनी है तो हमें अितिहासको नहीं दुहराना चाहिये, परन्तु नये अितिहासकी रचना करनी चाहिये । हमारे पूर्वज हमारे लिअे जो बातें छोड़ गये हैं, अुनमें हमें कुछ तरक्की करनी चाहिये । यदि हम दृश्य जगतमें नयी नयी खोजें कर रहे हैं, तो क्या हमें आध्यात्मिक क्षेत्रमें अपनेको दिवालिया साबित करना चाहिये? अपवादोंको बढ़ाकर अुन्हें ही नियम बना देना क्या असम्भव है? क्या मनुष्यको हमेशा पहले पशु ही होना चाहिये और बादमें मनुष्य? (हिन्दी नवजीवन, ६–५–'२६, पृ. ३०१)

www.vinoba.in

अहिंसा और प्रजातंत्र

१२. सच्चा और साधारण वर्गका प्रजातंत्र या स्वराज असत्य और हिंसक साधनोंसे कदापि नहीं मिलनेका। क्योंकि अुसमें विरोधियोंके नाशको अुसके स्वाभाविक परिणामके रूपमें स्वीकार करना पड़ता है। परिणामतः व्यक्तिकी मुक्ति हो ही नहीं सकती। व्यक्तिगत मुक्ति शुद्ध अहिंसासे ही फलित हो सकती है। (हरिजन-सेवक, ३–६–'३९, पृष्ठ १२७–२८)

१३. जब कि हिंसाका प्रयोग दुश्मनको चोट पहुँचानेमें किया जाता है (जिसमें दुश्मनका विनाश शरीक है) और वह तभी सफल होती है जब वह दुश्मनकी हिंसासे ज्यादा शक्तिशाली हो, तब अहिंसक कार्रवाअी विरोधीके कितनी ही हिंसक तैयारियोंसे लैस होते हुअे भी की जा सकती है। कमजोरकी हिंसा कुदरती तौर पर कभी अपनेसे ज्यादा शक्तिशाली हिंसकके सामने जीतते नहीं सुनी गयी। लेकिन बिलकुल कमजोरकी अहिंसक कार्रवाअीकी जीत तो रोजकी बात है। (गांधीजीका सरकारसे पत्र व्यवहार — १९४२–४४, पृ. १७९)

१४. सबसे कमजोर राज्य भी अगर अहिंसाकी कला सीख जाय, तो वह अपनेको हमलेसे बचा सकता है। लेकिन अेक छोटासा राज्य, चाहे वह शस्त्रोंसे कितना ही सुसज्जित क्यों न हो, अच्छे अस्त्र-शस्त्रधारी राष्ट्रोंके गुटके बीच अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकता। अुसे अपनेको या तो मिटा देना पड़ता है या अैसे गुटमेंसे किसी अेक राष्ट्रके संरक्षणमें रहना पड़ता है। (हरिजनसेवक — ७–१०–'३९, पृ. २६९)

१५. युद्धका विज्ञान शुद्ध और स्पष्ट अधिनायकत्व (तानाशाही) की ओर ले जाता है। अेक मात्र अहिंसाका विज्ञान ही शुद्ध प्रजातन्त्रकी ओर ले जानेवाला है। अिंग्लैण्ड, फ्रान्स और अमेरिकाको यह सोच लेना है कि वे अिनमेंसे किसको चुनेंगे। यही अिन दो अधिनायकों (डिक्टेटरों — हिटलर और मुसोलिनी) की चुनौती है।

रूसका अभी अिन बातोंसे कोअी मतलब नहीं है। रूसमें तो अेक अैसा अधिनायक है, जो शान्तिके सपने देखता है और यह समझता है कि खूनकी नदियाँ बहाकर वह अुसे स्थापित करेगा। रूसी अधिनायकत्व दुनियाके लिअे कैसा होगा, यह अभी कोअी नहीं कह सकता। (हरिजनसेवक — १५–१०–'३८, पृ० २७७)

व्यवहारमें अहिंसा

१६. अहिंसामें विश्वास करनेवाला अिस वचनसे बँधा हुआ है कि किसी भी चीजके बचावमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे शारीरिक शक्ति या हिंसाका सहारा न लिया जाय। लेकिन जो संस्थायें या देश अहिंसामें विश्वास नहीं करते, अुन्हें मदद न देनेका अुसका धर्म हो, तो अुदाहरणके लिअे हिन्दुस्तानको स्वराज्य प्राप्त करानेमें मुझे मदद देनेकी छूट न होगी। क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि स्वराज्य पानेके बाद हिन्दुस्तानकी पार्लियामेन्ट थोड़ी संख्यामें सेना और पुलिस दोनों रखेगी। या हम अेक घरेलू अुदाहरण लें: अपने किसी लड़केको अिन्साफ पानेमें शायद अिसलिअे मैं मदद नहीं कर सकूँगा कि वह सचमुच अहिंसामें विश्वास नहीं करता।

अैसे आदमियोंकी कमी नहीं है, जिनका यह विश्वास है कि पूर्ण अहिंसाका मतलब कामसे पूर्ण निवृत्ति है। लेकिन मेरी अहिंसाका सिद्धान्त अिस तरहका नहीं है। मेरा काम अितना ही है कि मैं खुद किसी तरहकी हिंसा न करूँ और अपनी सेवाके द्वारा या समझा कर अीश्वरके जितने भी प्राणियोंको अपने आचार और विश्वासमें साथ देनेके लिअे राजी कर सकूँ, करूँ। लेकिन यदि मैं किसी तजवीज या आदमीके अुचित काममें अिसलिअे मदद न करूँ कि वह मेरे अहिंसाके सिद्धान्तसे मेल नहीं खाता, तो मैं अपने विश्वासके प्रति वफादार नहीं रहूँगा। यदि मैं किसीको सही पक्षमें देखूँ और फिर भी जिन्होंने अुसके खिलाफ जाल रच रखा है, अुनसे बचानेके लिअे अहिंसाकी कड़ी मर्यादामें रहकर अुसकी मदद न करूँ, तो मैं हिंसाको ही बढ़ाअूँगा। जब दोनों पक्ष हिंसामें विश्वास करते हों, तब भी अक्सर किसी अेक तरफ तो न्याय होता ही है। जिसके घरमें चोरी हुअी हो, वह अगर शारीरिक बलसे अपनी खोअी हुअी दौलतको पानेकी कोशिश करे, तो भी अुसके पक्षमें न्याय तो है ही। यदि नुकसान अुठानेवाले पक्षको सत्याग्रह यानी शरीरबलके बजाय प्रेम या आत्म-बलसे अपनी खोअी हुअी दौलत फिरसे पानेके लिअे राजी किया जा सके, तो यह अहिंसाकी जीत होगी। (यंग अिण्डिया, १–६–'२१, पृ. १७३)

(अंग्रेजीसे)

सेवाग्राम शान्तिसंमेलनके प्रस्ताव

१. ता. २६, २७ और २८ जनवरी १९४९ को शान्तिप्रेमियोंका संमेलन बाबू राजेन्द्रप्रसादकी अध्यक्षतामें सेवाग्राममें हुआ। संमेलनमें हिन्दुस्तानके सभी हिस्सोंसे ४०–५० तथा युरोप और अमेरिकासे भी कअी लोग आये थे। अपनी मृत्युके पहले गांधीजीने अहिंसाके सिद्धान्तको माननेवाले स्त्री-पुरुषोंकी अेक विश्व-परिषदकी जो योजना मंजूर की थी, अुसे संमेलन शिरोधार्य मानता है। संमेलन तय करता है कि यह परिषद शान्तिनिकेतनमें ता. १ से ८ दिसम्बर १९४९तक की जाय; विदेशोंसे आनेवाले प्रतिनिधियोंको परिषदके बाद धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, और खास कर गांधीजीके जीवन और कार्यसे सम्बन्धित संस्थाओं और व्यक्तियोंको देखने और मिलनेकी सुविधा कर देनेका प्रबन्ध किया जाय और अुसके बाद प्रतिनिधि फिरसे जनवरी १९५० के शुरूमें सेवाग्राममें मिलें। संमेलन जनताको आमंत्रित करता है कि वह अिस परिषदकी तैयारीमें हिस्सा ले तथा राष्ट्रों और वर्गोंके बीच होनेवाले संघर्षोंमें अहिंसाको किस तरह कार्यान्वित कर सकते हैं, अिसकी चर्चा करनेके लिअे स्थानीय संघ या समितियाँ कायम करे। संमेलन आशा करता है कि जनता अिस सम्बन्धमें विश्व शान्ति-परिषदके मंत्री श्री हीरालाल बोस, १ अपर वूड स्ट्रीट, कलकत्तासे पत्र-व्यवहार करेगी।

२. आगामी शीत ऋतुमें हिंदुस्तानमें होनेवाली विश्व शांति-परिषदमें अुपस्थित रहनेके लिअे अेशिया, अफ्रीका, युरोप, अमेरिका और आस्ट्रेलियासे शांतिके लिअे प्रत्यक्ष कार्य करनेवाले ५० कार्यकर्ताओंको बुलाया गया है। गांधीजीकी यह अिच्छा थी कि हिंदुस्तानको, आमंत्रित करनेवाले देशके नाते, आमंत्रण स्वीकार करनेवाले कार्यकर्ताओंका पूरा खर्च अुठानेका सौभाग्य मिलना चाहिये। हम विदित करना चाहते हैं कि विदेशसे आनेवाले कअी प्रतिनिधियोंका खर्च अुनके देशके द्वारा ही अुठाया जा रहा है। फिर भी हिंदुस्तानमें होनेवाले खर्च तथा दूसरे देशोंसे आनेवाले कुछ प्रतिनिधियोंके प्रवासके खर्चके लिअे हमें २,५०,००० (ढाअी लाख) रुपयोंकी आवश्यकता है। विश्व-शांतिके लिअे काम करनेवाले लोगोंको हम आमंत्रित करते हैं कि वे अिस अपीलको अुदारतासे पूरी करें।

३. यह सम्मेलन सरकार और जनतासे प्रार्थना करता है कि वे हिन्दुस्तानकी स्वराज्य प्राप्तिमें अहिंसाके अुपयोगकी अुल्लेखनीय सफलताका हमेशा स्मरण रखें और आजकी कठिन समस्याओं और प्रसंगोंको हल करनेके लिअे जिनकी आवश्यकता है, अैसे अहिंसक तरीकोंकी खोज करें। हम जानते हैं कि अपने खुदके जीवनमें सत्य और अहिंसाको प्रत्यक्ष दिखानेमें हम असफल रहे हैं, लेकिन जनतामें और खासकर नअी पीढ़ीमें शांति-मानसके निर्माणके लिअे जो सक्रिय कोशिश कर रहे हैं, अुन सब लोगोंकी शुभ कामनाओंके साथ हम संबंध कायम करना चाहते हैं।

४. अिस संमेलनका विश्वास है कि हिन्दुस्तानमें अैसे अेक भाअी-चारेकी बहुत आवश्यकता है, जिसका मुख्य काम यह रहेगा कि वह सत्य और अहिंसा पर आधारित विश्वकी रचनाको प्रत्यक्ष करनेमें

www.vinoba.in

मदद दे। जीवनके नियमके तौरपर सत्य और अहिंसाको माननेवाले सब लोग अिस भाअीचारेके सदस्य हो सकेंगे।

अिस भाअीचारेके मुख्य काम ये रहेंगे: —

(१) हिन्दुस्तानमें सत्य और अहिंसा पर आधारित समाजकी रचनाको प्रत्यक्ष करनेका प्रयत्न करना।

(२) वर्गों और राष्ट्रोंके बीचके संघर्षके कारणोंको दूर करनेके लिअे काम करना।

(३) संघर्षोंके घावोंको मिटानेमें सहायता करना।

(४) व्यक्तिगत अनुभवोंके आदान-प्रदानके द्वारा आंतर-राष्ट्रीय समझदारी तथा सत्य और अहिंसाके विश्व व्यापी स्वीकारको बढ़ावा देना। और संघर्षोंको परिणामकारक तरीकेसे दूर करनेके लिअे स्थानीय या सर्वसामान्य शांतिदलोंका संगठन करना।

(५) विश्व-शांतिकी स्थापना करनेके लिअे सत्य और अहिंसाके अन्य काम हाथमें लेना।

५. विश्व शांति-परिषदकी कार्यकारिणी समितिसे यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि वह अूपरके प्रस्तावोंको प्रत्यक्ष रूप देनेकी कृपा करे।

(‘खादी जगत्’से)

सच्ची जिन्दगी

[२२ अगस्त (१९०५?) के दिन गांधीजीने जोहान्सबर्गके थिओसाफिकल लाजके जलसेमें जो भाषण दिया था, वह नीचे दिया जाता है। वह दिसम्बर १९४८ के ‘थिओसाफिस्ट’से नकल किया गया है।
— वा० गो० दे०]

गांधीजीने कहा कि मैं अिस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि थिओसाफी अुसूली तौर पर हिन्दू धर्म है और हिन्दू धर्म अमली तौर पर थिओसाफी है।

थिओसाफीके साहित्यमें बहुतसी अैसी तारीफके लायक किताबें हैं, जिन्हें पढ़कर हर कोअी खूब फायदा अुठा सकता है। लेकिन मुझे अैसा लगता है कि अुन किताबोंमें दिमागी अध्ययन (मुताला) और सोचविचार पर, दलील पर और सोअी हुअी ताकतों (योगिक सिद्धियों) के विकास पर बहुत ज्यादा जोर दिया गया है; और अिनके पीछे लगनेसे थिओसाफीका असली मकसद — यानी अिन्सानी भाअीचारा और अिन्सानकी अिखलाकी (नैतिक) तरक्की — गुम हो गया है। अिससे मेरा मतलब यह नहीं कि अिस तरहके अध्ययनकी अिन्सानकी जिन्दगीमें कोअी जरूरत नहीं है। लेकिन मेरा खयाल है कि हर आदमीके लिअे जिस रास्ते पर चलना बिलकुल जरूरी है, अुस पर वह पहले चलना सीखे और बादमें अिन बातोंमें पड़े। जीवनके कुछ अैसे नैतिक नियम हैं, जिनका अपने जीवनमें ठीक ठीक अमल करनेके बाद ही आदमी धर्मकी किताबोंको समझ सकता है।

जब कोअी आदमी कोअी विद्या या अिल्म हासिल करना चाहता है, तो सबसे पहले अुसे अुम्मेदवारीका अिम्तहान पास करना पड़ता है। लेकिन लोग यह समझते हैं कि कोअी मजहबी किताब पढ़नेसे पहले किसी तैयारी की जरूरत नहीं, और बगैर सिखाये ही वे अुन किताबोंको पढ़ सकते हैं और खुद अुनका मतलब निकाल सकते हैं। अुनका यह खयाल है कि मनका यह रुख ही आत्माकी सच्ची आजादी है। लेकिन मेरी रायमें यह अैसी चीजों पर लापरवाहीसे हाथ आजमानेके सिवा कुछ नहीं है, जिनकी अुन्हें जरा भी जानकारी नहीं होती। हिन्दू धर्मके तमाम ग्रन्थोंमें यह बताया गया है कि अिन किताबोंको हाथमें लेनेसे पहले यह जरूरी है कि हम अपने जीवनको पूरी तरह शुद्ध और सच्चा बना लें, और अपने अुन जजबात या वासनाओं पर काबू पा लें, जो हमें अपने असल मकसदसे दूर करती हैं।

अिन किताबोंमें मनका अेक मदमाते बन्दरसे मुकाबला किया गया है। वह बहुत ठीक है। अगर आदमी अपने दिमागोंकी ठीक तरहसे खोज करें, तो अुन्हें मालूम होगा कि दूसरोंके बारेमें बुरा सोचनेका अुनके पास कोअी कारण नहीं है; और वे अपने आपको ही बुरा कहने लगेंगे, क्योंकि अिस खोजसे उन्हें पता चलेगा कि भले वे दूसरोंको डाकू और खूनी समझते हों, लेकिन दरअसल अपने भीतर ही उन्होंने डाकुओं और खूनियोंको जगह दे रखी है। अिसलिअे मेरी सलाह है कि आप अपने अध्ययनके बारेमें अेक हद बाँध लें। अिस हदबन्दीसे आपका काम रुकनेके बजाय आपकी ताकत बढ़ेगी और आप आध्यात्मिक (रूहानी) दृष्टिसे ज्यादा अूँचे अुठेंगे।

मैं नहीं मानता कि हमारी तरक्कीके लिअे हमें अपने कामों और अध्ययनका दायरा बढ़ाना जरूरी है। अिसके बजाय हमारा यह फर्ज है कि हम अपने अध्ययन और कामोंकी गहराअीमें जाने पर ज्यादा जोर दें। क्योंकि अगर अिन्सान अपनी जिन्दगीमें अपना ध्यान बहुतसी बातों पर बाँटनेके बजाय अेक खास चीज या खयाल पर लगावे, तो वह अपने आपका और मिलनेवाले मौकोंका ज्यादा अच्छा अुपयोग कर सकता है।

हिन्दू ऋषि-मुनियोंने हमें बताया है कि जिन्दगीमें चाहे कितनी ही रुकावटें आवें और चाहे कितनी ही पाबन्दियाँ हों, फिर भी सिर्फ मन ही मनमें खुदाअी बातोंको समझनेके बनिस्बत अैसी जिन्दगी बिताना कहीं ज्यादा बड़ी चीज है। अुन्होंने हमें सिखाया है कि जब तक हम धीरे धीरे और अेक अेक बात पर अपनी जिन्दगीमें अमल नहीं करेंगे, तब तक हम पूरी खुदाअी तालीम समझ नहीं सकेंगे। अिसलिअे मेरा आप लोगोंसे अर्ज है कि अगर आप लोग सच्चा जीवन बिताना चाहते हैं, तो वह अिस हॉलमें या थिओसाफीके पुस्तकालयमें बितानेकी चीज नहीं है, बल्कि हमारे आसपासकी दुनियामें अुस थोड़ी सी तालीम पर सच्चा अमल करके बितानेकी चीज है, जिसे हम समझ सके हैं।

(अंग्रेजीसे)

आरोग्यकी कुंजी

लेखक : गांधीजी; अनुवादक : सुशीला नय्यर

गांधीजीके शब्दोंमें अिस किताबको “विचारपूर्वक पढ़नेवाले पाठकों और अिसमें दिये हुअे नियमोंपर अमल करनेवालोंको आरोग्यकी कुंजी मिल जायगी, और अुन्हें डॉक्टरों तथा वैद्योंकी देहली नहीं तोड़नी पड़ेगी।”

कीमत १० आना　　डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद

विषय-सूची

			पृष्ठ
धर्म बदलनेका काम	...	किशोरलाल मशरूवाला	४१३
तरक्की या बरबादी?	...	मीराबहन	४१४
जातिसे राष्ट्रकी ओर	...	किशोरलाल मशरूवाला	४१५
बेअीमानीकी बाढ़	...	किशोरलाल मशरूवाला	
सत्य और अहिंसा — २	...	गांधीजी	४१६
सेवाग्राम शान्तिसम्मेलनके प्रस्ताव	...		४१८
सच्ची जिन्दगी	...	गांधीजी	४१९
टिप्पणियाँ			४२०
हिन्दुस्तानी प्रचार परीक्षायें	...	अमृतलाल नाणावटी	४१४
पं० जवाहरलाल और सरदार वल्लभभाअी	...	कि० मशरूवाला	४१६
डरबनका दंगा	...	कि० मशरूवाला	४१७
धन्यवाद	...	कि० मशरूवाला	४१७
१२ फरवरी	...	कि० मशरूवाला	४१७
अेक अच्छी मिसाल	...	कि० मशरूवाला	४१७
गुजराती लिपिको नागरीका रूप दिया जाय	...	कि० मशरूवाला	४१७
‘खादी जगत्’ और गोसेवा	...	राधाकृष्ण बजाज	४१८

www.vinoba.in